

## प्रथम अधिकरण

समावेशी शिक्षा के प्रति बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन

## समावेशी शिक्षा के प्रति बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन

**प्रस्तावना :-** समावेशी शिक्षा का अर्थ है, शिक्षा में सभी प्रकार के विद्यार्थियों का समावेश अर्थात् समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को सामान्य विद्यार्थियों के साथ ही शिक्षा दी जाती है, वर्तमान शिक्षा में समानता, सहभागिता, स्वतन्त्रता पर जोर दिया जा रहा है, समावेशी शिक्षाव्यवस्था के अन्तर्गत शिक्षकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि समावेशी शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक खुद को केवल पठन-पाठन तक सीमित नहीं रखता, बल्कि विशेष शैक्षिक आवश्यकता वाले विद्यार्थियों का कक्षा में उचित ढंग से समायोजन करना, उनके लिए सहायक शिक्षक सामाग्री का निर्माण, आदि कार्य करने पड़ते हैं। समावेशी शिक्षा व्यवस्था में सामान्य शिक्षकों के व्यक्तित्व का भी विकास होता है, शिक्षकों में कक्षा प्रबन्धन के गुणों का विकास होता है, तथा समस्त प्रकार के विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने की योग्यता का विकास करते हैं, इसके द्वारा सामान्य शिक्षकों में सामूहिक कार्य कौशल का विकास होता है, राष्ट्र के लक्ष्यपरक शैक्षिक उत्थान की दृष्टि से समावेशी शिक्षा, शिक्षण के सभी अच्छे व्यवहारों का समावेशन है, इससे वंचित होना निम्न स्तरीय जीवन दशा या अलगाव घोषित करता है, जो कि कुछ व्यक्तियों को उनके समाज की सांस्कृतिक उपलब्धियों में भाग लेने से रोक देता है।

### समावेशी शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य -

- समावेशी शिक्षा एक शिक्षा प्रणाली है इसके अनुसार सामान्य विद्यार्थियों और एक विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को समान शिक्षा व समान अवसर मिले।

### समावेशी शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य -

- समावेशी शिक्षा एक शिक्षा प्रणाली है, इसके अनुसार एक सामान्य विद्यार्थियों और एक विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को समान शिक्षा व समान अवसर मिले।
- इसमें सामान्य और विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के साथ-साथ शिक्षा प्राप्त करते हैं।
- इसमें समस्त प्रकार की शैक्षणिक गतिविधियों में समस्त विद्यार्थियों की सहभागिता रहती है।
- इसमें प्रत्येक विद्यार्थियों की व्यक्तिगत क्षमताओं का समुचित विकास होता है।

समावेशी शिक्षा सम्मान और अनेक अपनेपन की संस्कृति के साथ व्यक्तिगत मतभेदों को स्वीकार करने के लिए भी अवसर प्रदान करती है। समावेशी शिक्षा केवल विशेष विद्यार्थियों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका अर्थ है, किसी भी विद्यार्थियों का बहिष्कार न करना।

#### समावेशी शिक्षा की आवश्यकता -

- सामान्य मानसिक विकास हेतु।
- सामाजिक एकीकरण हेतु
- शैक्षणिक एकीकरण हेतु
- समानता के सिद्धांत के अनुपालन हेतु
- अत्यधिक व्यय से बचने हेतु

#### समावेशी शिक्षा का उद्देश्य -

- विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाकर उनको समाज में मुख्यधारा से जोड़ना सभी विद्यार्थियों को शिक्षा का समान अवसर उपलब्ध कराना, शिक्षा व्यवस्था में प्रजातांत्रिक मूल्यों की स्थापना करना।
- समाज में विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों से संबंधित समस्त बुराईयों को दूर करना।

- समावेशी शिक्षा केवल विकलांग विद्यार्थियों के लिए ही नहीं बल्कि इसका अर्थ कोई भी बच्चे का बहिष्कार न हो।
- वंचित वर्ग के विद्यार्थियों के लिए शिक्षा मुहैया कराने हेतु भारतीय संविधान की धाराओं 15 (1), 21(A), 45 और 46 विशेष प्रावधान का अनुपालन कराया जाये।
- विशिष्ट आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की श्रेणी में शारीरिक रूप से अक्षम, प्रतिभासंपन्न, मंदबुद्धि, पिछड़े बालक, असमायोजित एवं अपराधी विद्यार्थियों आदि प्रकार के विद्यार्थी सम्मिलित होते हैं।
- समावेशी शिक्षा से अभिप्राय है कि विद्यार्थियों को सार्थक शिक्षा अनुकूलतम व वातावरण में उपलब्ध कराई जाए।

### अध्ययन का औचित्य -

वर्तमान समय में शिक्षा के साथ साथ समावेशी शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया जा रहा है। समावेशी शिक्षा, शिक्षा की ऐसी प्रणाली है, जिसमें विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को सामान्य विद्यार्थियों के साथ मुख्यधारा के विद्यालयों में अध्ययन- अध्यापन और आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिलता है, जिससे वे समाज की मुख्यधारा में शामिल हो सकें। इसके अन्तर्गत विद्यालयों में अध्ययन-अध्यापन के अलावा विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए बाधारहित वातावरण का निर्माण कार्य भी शामिल है। शिक्षण की इस नवीन प्रणाली से हाशिये पर के वे बच्चे लाभान्वित होते हैं, जिन्हें अपनी दिनचर्या से लेकर अध्ययन पूरी करने तक विशेष देखभाल की आवश्यकता पड़ती है। विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी अपने आपको दूसरे विद्यार्थी की अपेक्षा कमजोर तथा हीन समझते हैं, जिसके कारण उनके साथ पृथक्ता से व्यवहार किया जाता है। समावेशी शिक्षा व्यवस्था में विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को सामान्य विद्यार्थियों के साथ मानसिक रूप से प्रगति करने का अवसर प्रदान किये जाते हैं, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी यह सोचता है कि वह किसी भी प्रकार से किसी अन्य विद्यार्थी से कमतर नहीं है।



**सार्जेंट रिपोर्ट (1944 )-** जहाँ तक संभव हो विशेष बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ सामान्य विद्यालयों में विशिष्ट व्यवहार किया जाना चाहिये।

**कोठारी आयोग (1964-66 )-** एक विशेष बच्चे के लिये शिक्षा का पहला कार्य यह है कि सामान्य बच्चों की आवश्यकता पूर्ति के लिये बनाए गये सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण में सामंजस के लिए उसे तैयार किया।

**मिल्स व निधि (2008)-** ने 'द एजुकेशन फॉर ऑलाएंड इक्लूसिव एजुकेशन डिबेट' कानफिलकट कॉण्ट्रीक्सन ऑफ आपच्युनिटी नामक शोध में यह बताया गया कि समावेशी शिक्षा का उद्देश्य लोकतांत्रिक सिद्धांतों, समानता और सामाजिक न्याय से संबंधित मूल्यों और विश्वासों को प्राप्त करना है, जिससे समस्त विद्यार्थी शिक्षा में सम्मिलित हो सके।

**मार्टसन एण्ड मैगनूसन (1991)-** ने को-आपरेटिव टीचिंग प्रोजेक्ट (सी.टी.पी.) पर कार्य करके यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि विद्यालयी रूप से असफल छात्रोंको समान कक्षा के साथ ही सप्ताह में कुछ समय विशेष अनुदेशन देने से उनकी उपलब्धि पर सामान्य बच्चों की तरह सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

**काम्पस बारबेट, लियोनार्ड एवं डेलक्वाद्री (1994)-** ने क्लास वाइज पीयर ट्यूटोरिंग (सी.डब्ल्यू. पी.टी.) विषय पर आत्मकेन्द्रित एवं गैर आत्मकेन्द्रित छात्रों को लेकर अध्ययन कार्य करके यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि - आत्मकेन्द्रित वाले वे छात्र जो, पहले कम सामाजिकथे, सी.डब्ल्यू. पी.टी के उपयोग के बाद अत्यधिक सामाहजक हो गये।

उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि वर्तमान समय में समावेशी शिक्षा समस्त विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। समावेशी शिक्षा में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि समावेशी शिक्षा की कक्षा प्रक्रिया में शिक्षक की अभिवृत्ति भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। राम (2019) ने अपने शोध कार्य में पाया कि शिक्षकों का विशेष विद्यार्थियों से प्रश्न न पूछना एवं उनके गृहकार्य की जाँच को अन्य विद्यार्थियों के समान न करना, इस प्रकार की व्यवहार एवं अभिवृत्ति इन विद्यार्थियों को कक्षा बहिष्करण की तरफ ले

जाता है। इस प्रकार की शिक्षकों की अभिवृत्ति एवं व्यवहार समावेशी शिक्षा के सफल संचालन में कठिनाई उत्पन्न करता है। सामान्यतः शिक्षक का अभिवृत्ति एवं व्यवहार विशेष विद्यार्थियों के प्रति सहानुभूति पूर्ण होता है, जिससे शिक्षक इस प्रकार के विद्यार्थियों को अन्यो से कमजोर समझता है या सीखने के योग्य नहीं समझता है, जिससे ये विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी कक्षा में होते हुए भी अपने को कक्षा से अलग पाते हैं। ज्यादातर शिक्षक विशेष बच्चों के प्रति सहानुभूति की अभिवृत्ति अपनाते हैं, जैसा की कलाम (2019) ने अपने शोध में बतलाया कि शिक्षकों को सहानुभूति के बजाय समानुभूति की अभिवृत्ति अपनाना चाहिए, जिससे इस प्रकार के विद्यार्थी अपने आप को कक्षा में अन्य विद्यार्थियों के समान बनाने में सहायक होता है।

अतः यह आवश्यक हो जाता है कि बी.एड. में सहायक को प्रशिक्षण के दौरान इन समस्त कौशलों का विकास तथा विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति को विकसित किया जाये, जिससे वे अपने शैक्षिक सेवाकाल के दौरान उत्तम तरीके से अपने कर्तव्य का निर्वहन कर सकें। अतः समावेशी शिक्षा के प्रति बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन की रूपरेखा तैयार की गयी। शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में संदर्भ में जो अध्ययन उपलब्ध हो सके, उनकी समीक्षा करने पर यह ज्ञात हुआ कि वे अध्ययन सेवाकालीन शिक्षकों से संबंधित है तथा सेवापूर्व प्रशिक्षणार्थियों से संबंधित अध्ययन का आभाव पाया। अतः शोधार्थी को जिज्ञासा हुई।

### **शोधप्रश्न-**

समावेशी शिक्षा के प्रति बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति कैसी है?

### **समस्या कथन-**

समावेशी शिक्षा के प्रति बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन शोध में प्रयुक्त पदों की संक्रियात्मक परिभाषा- समावेशी शिक्षा - समावेशी शिक्षा से अभिप्राय विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को सामान्य विद्यार्थियों के साथ शिक्षा प्रदान करने से है।



—**एड. प्रशिक्षणार्थी** - बी.एड. प्रशिक्षणार्थी से अभिप्राय वर्तमान सत्र में अध्ययन कर रहे बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों से समावेशी शिक्षा।

**अभिवृत्ति** - अभिवृत्ति से अभिप्राय प्रति बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के दृष्टिकोण से है।

**अध्ययन का उद्देश्य**- बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना। लैंगिक आधार पर बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

स्थिति के आधार पर बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

**परिकल्पनाएँ**- समावेशी शिक्षा के प्रति छात्र और छात्राओं बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

समावेशी शिक्षा के प्रति शहरी और ग्रामीण बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

**शोध अभिकल्प** - प्रस्तावित शोध के अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त होगी।

**जनसंख्या** - प्रस्तावित शोध अध्ययन में भोपाल जनपद के राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) से मान्यता प्राप्त महाविद्यालयों में अध्ययनरत समस्त बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया जायेगा।

**प्रतिदर्शन विधि** -

प्रस्तावित शोध अध्ययन में भोपाल जनपद के फंडा में से शोधार्थी ने दो शिक्षा महाविद्यालय का चयन किया जायेगा। प्रतिदर्श के रूप में चयनित महाविद्यालयों के कुल 104 बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया जायेगा।

शोध आकड़ों में संग्रह हेतु उपकरण का चयन - समावेशी शिक्षा के प्रति बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति मापनी स्वयं शोधार्थी द्वारा निर्मित किया जायेगा।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी प्रविधियाँ- प्रस्तावित शोध में उपकरण मापनी से प्राप्त शोध आंकड़ों की प्रकृति के अनुरूप शोधार्थी द्वारा उपयुक्त सांख्यिकी प्रविधियाँ उपयोग की जायेगी यथा अध्ययन ही परीक्षण, एस.पी.एस.एस. इत्यादि।